शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2022
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मैथिलीशरण गुप्त के 'वीरांगना' काव्य में नारी चेतना

कल्पना वर्मा
वसंत कुंज,
नई दिल्ली, 110070, भारत

शोध संक्षेप

मैथिलीशरण गुप्त आधुनिक हिंदी काव्य जगत के अनुपम रत्नहैं। इन्होंने अपनी प्रेरणादायक कविताओं से राष्ट्रीय जीवन में चेतना का संचार किया। गुप्त जी ने सदा नारी के गौरवपूर्ण रूपों को साहित्य में उकेरा है। मैथिलीशरण गुप्त ने माइकेल मधुसूदन की काव्य रचना 'वीरांगना' का 'मधुप नाम से अनुवाद किया। अनूदित रचना होने पर भी 'वीरांगना काव्य में उनकी लेखनी की प्रखरता स्पष्ट झलकती है। वीरांगना की नारियों को अपने साहित्य में स्थान देकर उनको अमर बना दिया। उन्होंने भारत के गौरवपूर्ण अतीत और भारतीय संस्कृति की महत्ता का ओजपूर्ण प्रतिपादन किया। इन्होंने नारी को अपने साहित्य में विशेष स्थान प्रदान किया। 'वीरांगना' काव्य में पत्रों के माध्यम से पुराणों और इतिहास में व्याप्त नारी वेदना को अपनी लेखनी का मुख्य बिन्दु बना आधुनिक समाज के सामने प्रस्तुत किया है। नारी का पति धर्म वह मूल्य है जो नर को मजबूत करता है, तो पुरुष का शील संयम भाव नारी को शक्ति देता है। नारी शक्ति नर की शक्ति से शक्तिपुंज बनती है।

भूमिका

बँगला भाषा के श्रेष्ठ साहित्यकार मधुसूदन ने 'वीरांगना' काव्य लिखा, जिसका अनुवाद राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्ता ने 'मधुप' नाम से किया। मैथीलिशरण गुप्त का जन्म चिरगाँव में 3 अगस्त 1886 को हुआ। उन्होंने अपनी लेखनी से राष्ट्रकवि होने का गौरव प्राप्त किया। परंपरागत मानवीय संबंध राष्ट्रभक्ति नारी उत्थान इनकी लेखनी के श्रेष्ठ गुण हैं। महज 12 वर्ष की उम्र में इन्होंने ब्रज भाषा में कनक लता नाम से भक्ति पूर्ण कविताएं लिखनी प्रारंभ की। इनके काव्य में वीर गंभीर और कोमल अंशो का समावेश देखा जा सकता है।

'वीरांगना' काव्य में नारी चेतना

मैथिलीशरण गुप्त ने 'मेघनाद वध' में अपनी कवित्व शक्ति की चरम सीमा दिखाई है। रचना में ऐसा अद्भुत भाव शायद ही किसी काव्य में दिखाई देता है। वही ब्रजांगना में उनके कोमल भाव का संचार प्रस्फुटित होता है। इन दोनों काव्य का समावेश हमें 'वीरांगना' काव्य में देखने को मिलता है। मूल विरंगना काव्य बंगला भाषा के साहित्यकार मधुसूदन ने लिखा है। इसी का अनुवाद मैथिली शरण गुप्त ने 'मधुप' नाम से किया। रोमन के प्रसिद्ध कवि ओविड की वीर पत्रावली की तरह मधुसूदन ने 'वीरांगना' काव्य लिखा। ओविड ने रोमन की पौराणिक महिलाओं के पात्रों पवित्र पति परायण, हृदयेश्वरी प्रेमिकाओं एवं अभिमानिनी सतियों के हृदय में उठने वाली पीड़ा को पत्रों के माध्यम से प्रकट किया। यह ओविड की वीर पत्रावली के विशेष लक्षण हैं। यही लक्षण मधुसूदन के 'वीरांगना' काव्य में भी दिखाई देते हैं। गुप्त जी ने भी ऐतिहासिक व पौराणिक पत्नियों, प्रेमिकाओं के हृदय में रहस्य परिज्ञान संबंधी पीड़ा और समाज के बंधनों के

प्रति अनादर प्रदर्शित किया। दोनों काव्य में समानता होने पर भी गुप्त जी का वीरांगना काव्य अपना उत्कृष्ट स्थान रखता है। वीरांगना नाम पढ़ते ही पाठकों के मन में रानी लक्ष्मीबाई जैसी वीरांगनाओं की छवि मस्तिष्क में उभरती है। किंतु गुप्त जी ने इसमें पौराणिक पत्नियां, प्रेमिकाओं के पात्रों को उस समय लिया, जब समाज मे स्त्री अपने अस्तित्व को पाने के लिए घर की चार दिवारी से लेकर बाहर समाज तक जूझ रही थी। मैथिलीशरण गुप्त जी ने अपने समय में नारियों की समाज में स्थिति को पौराणिक व ऐतिहासिक नारी पात्रों के माध्यम से दिखाया है। उस समय समाज में नारी की पुरूष के अधीन स्थिति तथा मानसिक व दैहिक प्रताडना को काव्य का आधार बनाया है। 'वीरांगना' काव्य में 11 वीरांगनाओं के पत्रों को लिया गया है। जिसमें तारा, शूर्पनखा, उर्वशी और रुक्मणी के पत्रों में प्रेम की भिक्षा तथा प्रेम का अनुग्रह किया गया है। जानवी देवी ने पत्र में वासना मुक्त प्रेम के बंधनों को सर्वोपरि न मान राजा शांतनु को पत्र लिखा। शकुंतला, द्रोपदी, भानुमति और दुशाला यह पत्नी पात्र हैं, जिनमें भानुमति और दुशाला को पति के अमंगल की आशंका व्याकुल करती दिखाई देती है। पल-पल पति के अमंगल की आशंका से मन विकल हो यह पत्नियां पत्र लिखती हैं। द्रोपदी व शकुंतला ने पति के दूर चले जाने से दुखी होकर पत्र लिखा है। द्रोपदी जो पांच पतियों की पत्नी होकर भी अर्जुन से विशेष लगाव व प्रेम रखती है। महाप्रस्थान के समय जब अर्जुन अस्त्र विद्या सीखने इंद्रलोक चले जाते हैं, तो वह बहुत दुखी होकर पत्र लिखती है। ऋषि पुत्री शकुंतला दुष्यंत से ठगे जाने के डर से अति दुखी व द्रवित होकर पत्र लिखती है। कैकयी और जना के पत्रों में पति व्यवहार की पीड़ा मिलती है। गुप्त जी ने एक साथ इतने चरित्रों को एक विषय में समावेश कर काव्य में अपने उत्कृष्ट लेखनी का प्रमाण दिया। कवि ने नारी को सुगृहिणी का महत्वपूर्ण अंग स्वीकार किया है। तारा, गुरु बृहस्पति की पत्नी जो सोमदेव के रूप पर मोहित हो, अपनी मर्यादाओं को तोड़ सोमदेव को पत्र लिखती है। गुरु पत्नी होकर उसे अपनी आचरणहीनता का आभास है, किंतु वह सतीत्व धर्म का व्युत्क्रमण कर सोमदेव को पत्र लिखती है।

"सम्बोधन क्या दे तुम्हे, हाय! हे सुधानिधि,
भाग्यहीन तारा! मै तुम्हारी गुरु-पत्नी हूँ,
पर हे पुरुषरत्न, भाग्यदोष होने से,
होना चाहती हूँ, मै तुम्हारी पद-किंकरी!"1

वह सोमदेव के प्रेम में लज्जा मान कुल मर्यादा को भूल प्रेम की भिक्षा मांगते हुए प्रतीत होती है।

"आओ तब प्राण सखे, तारानाथ तारा के शान्त मनोज्वाला करो"

शूर्पणखा का पत्र लक्ष्मण को समर्पित है। लक्ष्मण के मोहिनी रूप को देखकर राक्षस कुल में जन्मी बाल विधवा शूर्पणखा मन ही मन लक्ष्मण से प्रेम करने लगती है। हम प्राय: शूर्पणखा का राक्षसी व विभत्स रूप ही सुनते आए हैं, किंतु मधुसूदन जी की 'वीरांगना' को पढ़कर एक अद्वितीय छवि प्रकट होती है। शूर्पणखा लक्ष्मण से प्रेम का आग्रह करती नजर आती है।

"गूथू कवरी मैं तथा चन्दन को पोंछ के,
लेकर लगाऊँ भस्म-लेप इस तन में,
पहनू मैं अक्षरमाला चन्दहार तोड़ के,
फूंक तुम देना प्रेम-मंत्र मेरे कान में,
दूंगी, मैं यौवन-धन प्रेम कुतूहल से"[2]

वह राक्षसों के वैभव का प्रलोभन दिखा लक्ष्मण के चरणों की दासी बनना चाहती है। राक्षस कुल

में उत्पन्न होने पर भी स्त्री के मन की प्रेम पीड़ा शूपर्णखा में झलकती है। उर्वशी एक अप्सरा है। अन्य प्रेमी वीरांगनाओं की पत्रिकाओं में कहीं न कहीं समाज व मन में लज्जा का भाव प्रकट हो जाता है। लेकिन उर्वशी को अपने रूप का अभिमान है, वह हृदय में उठ रहे भाव को मुक्त कंठ से व्यक्त करती है। उर्वशी और पुरुरवा की कथा महाकवि कालिदास के नाटक से ली गई है। जब केसी नामक दैत्य से पुरुरवा उर्वशी को बचाता है, तो स्वर्ग लोक की अप्सरा पुरुरवा के रूप लावण्य पर मुक्त हो जाती है।

"फूले हुए फूल मेरे माथे पर हैं गिरे,
कहती हर प्रिया है वीचि रव-मिस से,
मुझसे कि पूर्ण होगी तेरी मन: कामना,
भेजती हूँ भूप, इसी साहस से सेवा में,
चित्रलेखा आली को बना के पत्रवाहिका"[3]

प्रिय को भेजी गई प्रेम पाती में रुक्मणी का पत्र द्वारिकानाथ के लिए है। पुराणों में रुक्मणी को लक्ष्मी का अवतार बताया गया। रुक्मणी का प्रेम सीता व सावित्री के समान पवित्र है। उसमें इंद्रिय विकार व रूपज्य प्रेम नहीं उनके प्रेम में इंद्रिय पिपासा शून्य भाव ही प्रदर्शित होती है।

"तारो हे तारक, इस सकंट से उसको,
अबला कुलागंना हूँ, जी को कडा करके
हाय! किस साहस से लज्जा-भय छोडू मैं!"[4]

रुकमणी रुपज और काम भाव से परे होकर प्रेम को तारक कामदा मानती है। लज्जाशील कुल बालिका होने के कारण वह बहुत साहस जुटाकर अपने प्रियतम को पत्र लिखती है।

देवी रुक्मणी अपने प्रियतम की सूश्याम मूर्ति को हृदय में स्थापित कर उनकी आराधना करती है, किंतु जब दुष्ट शिशुपाल काल बन उनको ग्रास बना लेने के लिए आया तो वह अपनी सभी लज्जा को त्याग कर श्रीकृष्ण को पत्र लिखती है। पत्र में भी वह तारा, उर्वशी, शूपर्णखा की तरह काम जनित प्रेम का व्याख्यान न कर भागवत विशिष्ट बातों को ही लिखती है। पत्र को पढ़कर पाठकों के मन में भागवत कथा का अनुपम आनंद का भाव प्रकट होता है।

"जानती नहीं मै कहुँ दुख कथा किससे
तुम हो दयानिधि सुनो आज तुम्हें छोड़ के,
और कौन ठौर है अभागिनी को लोक में।"[5]

गुप्त जी ने रुक्मणी के द्वारा लिखे पत्र में एक श्रेष्ठ हृदय ग्राही रूप का वर्णन किया है, इसमे गुप्त जी, श्रेष्ठ हरि भक्तों की तरह भागवत पाठ करते व पाठकों के मन में हरिभक्ति जगाते नजर आते हैं। जानवी देवी के पत्र में कठोरता प्रदर्शित होती है। जानवी देवी के पत्र को पढ़ने से लगता है कि कवि केवल प्रेमिकाओं द्वारा प्रेम भिक्षा का वर्णन ही नहीं, बल्कि प्रेमी का प्रतिवाद व खंडन करते दिखाई देते है। जानवी देवी पति से आग्रह नहीं करती, बल्कि कठोरता से अपने पति को राज्य संभालने व अपने दायित्व का निर्वाह करने के लिए कहती है।

"पत्नी मत मानो अब मुझको!
महिमा असीम है तुम्हारे कुलमान से,
नरकुलराज तुम विश्व में विदित हो,
लौट आओ राजधानी को,
व्याकुल तुम्हारे बिना होगी हस्तिनापुरी"[6]

पत्रों मे वात्सल्य, गम्भीरता, हदय स्पर्श गंभीर सवाल जो भानुमती, दुशाला, दौपदी व शकुन्तला चारों दुखी पत्नी अपने कुलश्रेष्ठ पति से करती हैं। जो काव्य में कवि की निपुणता को प्रदर्शित करती है। गुप्त जी ने केवल प्रेमपाती ही नहीं लिखी बल्कि पुत्र मृत्यु शोक से दुखी जना अपने पति को कठोर तिरस्कारभरा पत्र लिखती है। जिस शत्रु अर्जुन ने रण में जना पुत्र को मारा

उसी से संधि कर पति, राज वैभव में डूबा हुआ है, तो उसका दुख मर्मान्तक बन जाता है।

"सहसा अंधेरा किया पुत्र रत्न हर के,
उसने हरा है क्या तुम्हारा आज ज्ञान भी!
ऐसा जो न होता तो बताओ तुम मुझको,
कैसे यह पाण्डु रथी पापी पार्थ आज हा!
अतिथि तुम्हारा हुआ उस कर का
रक्त से रंगा है जो तुम्हारे ही प्रचार के,"[7]

भानुमति, दुशाला दोनों को ही पति के अमंगल तथा द्रोपदी व शकुंतला ने पति के दूर चले जाने से दुखित हो पत्र लिखा, प्रत्येक नारी के पत्र में उसकी आयु, बुद्धि तथा संस्कार छलकते हैं। द्रोपदी पांच पतियों की पत्नी होने पर भी अर्जुन से विशेष लगाव व प्रेम करती थी। महाप्रस्थान के समय जब अर्जुन अस्त्र विद्या सीखने इंद्रलोक चले जाते हैं, तो वह कहती है।

"कामरूप तुम हो, मै जानती हूँ,"[8]

द्रोपदी के अलावा भी अर्जुन ने अन्य विवाह किए हुए थे। वह इस बात से बहुत दुखी थी। वह जानती है, कि अर्जुन में सुख भोग की कामना विद्यमान है।

"देव-सुख-भोगी तुम, अमर-सभा मे हो,
इन्द्रसनासीन, सेवा करती है यत्र से
सुन्दरी सुरागनाए रम्भा रम्यरूपिणी"[9]

उसको फिक्र है कि इंद्रसभा में तो बहुत ही सुंदर अप्सराएं दिन-रात सेवा में लगी रहती है। कहीं अर्जुन भी उनके मोहपाश में फंसकर वहीं न रह जाए वह लिखती है,

"पत्रवाह संग तुम्ही आओ यहाँ लौट के"[10]

'वीरांगना' काव्य में एक पत्र भानुमति द्वारा दुर्योधन को लिखा गया है। दुर्योधन का कुरुक्षेत्र में जाना उसे डरा रहा है।

"दासी है आधी रात सदा नाथ, तुम जब से
यात्रा कर घोर कुरूक्षेत्र रण में गये,
निद्रा नहीं आती, मिटी भोजन की रूचि है।"[11]

भानुमति व दुशाला दोनों का पत्र कुरुक्षेत्र के युद्ध में गए अपने पतियों को लिखा गया है। दुशाला अभिमन्यु का वध होने पर अर्जुन द्वारा ली गयी शपथ के भय से अपने पति जयद्रथ को पत्र लिखती है। दोनों वीरांगनाओं के पत्रों में पति को समझाती युद्ध के विनाश के बारे में बताती व स्वामी को परामर्श देती, तथा युद्ध से वापस आने को बाध्य करती नजर आती हैं।

भानुमती - "आओ तुम प्राणनाथ छोड़ कर रण को,
पांच गाँव मात्र पांच पाण्डव है मांगते!
तुमको अभाव क्या है ? तुष्ट करो उनको"[12]

वहीं दुशाला जयद्रथ को समझाती, वह द्रोपदी के साथ हुए अत्याचार को याद कराती है।

"नग्न किया चाहता था कौन वस्त्र खींच के,
हा! उस कुलागंना को! भाइयों की कीर्तियां
जानते नहीं क्या तुम लेखनी लजाती है!
आओ शीघ्र प्राण सखे, छोड़ रणभूमि को"[13]

अर्जुन के द्वारा जयद्रथ का वध करने की प्रतिज्ञा गुप्त जी ने दुशाला के माध्यम से वीर रस का प्रमाण प्रस्तुत किया है, कवि अपनी लेखनी से शरीर में रोमांच उत्साह भर देता है। इन पत्रों को पढ़ कभी सरल भाव तो कभी क्लिष्ट शैली के उत्कृष्ट प्रमाण पाते है। इन नारियों के पत्र के माध्यम से गुप्त जी ने अपनी भाषा अवसर और व्यक्ति अनुरूपता का प्रमाण प्रस्तुत किया है। जहां वीर रस से परिपूर्ण पाती पाठकों को रोमांचित करती है। वही करुण रस की पाती अपना प्रभाव छोड़ जाती है। गुप्त जी ने भानुमति को जहां कौरव कुल के कल्याण की चिंता करते दिखाया है, वहीं दुशाला जो कौरव कुल की दोहिता होने पर भी उसको केवल स्वामी के कल्याण की चिंता है।

"शीघ्र यह पापपुरी छोड़ चले जायेंगे,
सिन्धुराज मन्दिर मे.....
होता रहे, हो जो कुरु-पाण्डु-कुल भाग में।"[14]

दौपदी के समान शकुंतला भी बहू पत्नी पति की भार्या है। वह एक सरल स्वभावी ऋषि बालिका होने के कारण तपोवन पलीता है। उसे राज सुख नहीं चाहिए उसे तो लोक भय है, जब उसके पिता आश्रम में वापस आएंगे तो वह किस प्रकार उनका सामना करेगी।

"राज सुख भोगने से है नाथ मुझे क्या काम
लौट जब आश्रम में तात के वे आवेंगे,
क्या कहूंगी उनसे! बता दो देव दासी को।"[15]

शकुंतला के पत्र में उसके स्वभाव के अनुरूप ही शब्दों को लिया गया है। उसे डर लगने लगा है, शायद गंधर्व विवाह की आड़ में उसे छला गया है।

"घूमती हूँ नाथ! जिस वृक्ष तले तुमने
दासी को छला था, उस गन्धर्वी छल से।"[16]

जना और कैकेयी की पत्रिका बहुतों के मत से इस काव्य में सर्वोत्तम है। ये पत्र सत्यता के प्रति जिज्ञासा संदेह कठोर तिरस्कार से परिपूर्ण है। इसी कारण यह पत्र अति उत्कृष्ट प्रतीत होते हैं। जना के चरित्र को महाभारत में स्थान नहीं मिला, लेकिन काशी रामदास के महाभारत से कवि ने इस चरित्र का निर्माण किया है। कैकेयी और जना दोनों को स्वामी के व्यवहार से व्यघात लगता है। एक ओर जना के पत्र में पुत्र मृत्यु के व्यघात के कारण पति के लिए कठोर शब्दों से उपेक्षा भाव को दिखाया है।

"पुत्र पाण घाति शत्रु मित्र बना बैठा है!
सेवा करते हो तुम यत्र से सपत्र की
मान के अतिथि-रत्न हाय! कैसी लज्जा है,
किससे कहूँ मै अहो! दुख किससे कहूँ"[17]

कैकेयी अपने पुत्र सौभाग्य की चिंता में दुखी हो, अपने पति राजा दशरथ को पत्र लिखतीं है। वह याद दिलाती है, कि किस प्रकार से उसकी सेवा से खुश हो दशरथ ने उसे वचन दिया था, कि उसी का पुत्र राजगददी पर बैठेगा।

"याद करो किन्तु नर नाथ कथा पूर्व की,
सेवा नव यौवन मै जब की तुम्हारी थी
क्या प्रतिज्ञा की तब मेरे साथ तुमने।"[18]

कैकेयी और जना दोनों माताओं के दुःख में जना का दुःख ही सर्वोपरि है। इसमें मातृत्व के दुख की कोई सीमा नहीं रह जाती।

निष्कर्ष

'वीरांगना' काव्य सौंदर्य के स्थान पर आदर्श रूप में अपना उत्कृष्ट स्थान बनाता है। इस काव्य में गुप्त जी ने प्रत्येक नायिका का व्यवहार संवाद गंभीरता, इच्छा, अपने समय, संस्कार तथा स्थिति के अनुरूप दिखाया गया है। इन सभी वीरांगनाओं में जना का चरित्र ही वीरांगना नाम को प्रदर्शित करता है। एक जननी मां के पुत्र की मृत्यु करने वाले शत्रु के साथ जब उसी का पति शत्रु का स्वागत व आदर सत्कार करे, तो एक मां के हृदय पर कैसा व्यघात लगता है, उसकी तड़प को शब्द रूप में लिखा है। अपवित्र आदर्श रूप में शूर्पणखा उर्वशी और विशेष तौर पर तारा के पत्र को लिया गया है। इन तीनों के चरित्र के अनुरूप ही उपादान देकर उनका चरित्र चित्रण किया है। तारा के चरित्र को उन्होंने मूल पुराणों के विरोध चित्रित किया है। द्रोपदी के चरित्र को ज्योतिर्मय दिखाने के लिए शायद द्रोपदी व अर्जुन के पत्रों को कवि ने चित्रित किया है। द्रौपदी शायद इसी वजह से स्वामी के बहू भार्यात्व पर आक्षेप करती दिखाई गई है।

"देवबाला वल्लभ हो, नारियों के स्वामी हो"[19]

शकुंतला भी बहुपत्नीक पति की भार्या है। किंतु वन के लालन-पालन के कारण शकुंतला पति पर कटाक्ष करना नहीं जानती है। पृथ्वीपति राजा राजेश्वर ने उसे अपने चरणों में स्थान दिया उसके लिए यही बहुत सम्मान की बात है। वह राज वैभव न मांग केवल उचित सम्मान चाहती है। भानुमति और दुशाला एक ही कुल की होने पर दोनों को पति अमंगल की चिंता है। भानुमति को जहां पति की मृत्यु के साथ कुल के कल्याण की चिंता भी सताती है। वही दुशाला को केवल पति कल्याण की चिंता है।

"आओ, तुम आओ नाथ, छोड़ इस रण को,
फैंक कर तेरी, चाप, चर्म, असि वर्म्म को"[20]

गुप्त जी ने सभी वीरांगनाओं के साथ न्याय किया है। गुप्त जी की वीरांगनाओं को पढने पर पाठकों के सामने स्वयं ही दृश्य मनोचित्रात्मक प्रस्तुत होने लगते हैं। हर पत्र अपना अलग महत्व स्थान रखता है। माता पत्नी प्रेमिका जो वीरांगना जिस रूप में पत्र लिखती है, उसका दर्द महसूस होता है। यही मैथिलीशरण गुप्त जी की उत्कृष्ट लेखनी का परिचय है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 माइकेल मधुसूदन मधुप, वीरांगना, प्रकाशन साहित्य सदन, चिरगांव (झांसी), सस्करण 2013
2 प्रो. नगेन्द्र, एम.ए., साकेत एक अध्ययन, साहित्य रत्न भण्डार, सिविल लाइन, आगरा, संस्करण 1996
3 संजय सिंह बैरवा, मैथिलीशरण गुप्त के काव्य मे नारी चेतना, शोध ग्रन्थ, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा 2018

सन्दर्भ

1 *वीरांगना, मैथलीशरण गुप्त, पृष्ठ 20*
2 *वही, पृष्ठ 20*
3 *वही, पृष्ठ 91*
4 *वही, पृष्ठ 2*
5 *वही, पृष्ठ 29*
6 *वही, पृष्ठ 84*
7 *वही, पृष्ठ 94*
8 *वही, पृष्ठ 57*
9 *वही, पृष्ठ 57*
10 *वही, पृष्ठ 64*
11 *वही, पृष्ठ 65*
12 *वही, पृष्ठ 72*
13 *वही, पृष्ठ 79*
14 *वही, पृष्ठ 81*
15 *वही, पृष्ठ 17*
16 *वही, पृष्ठ 14*
17 *वही, पृष्ठ 93*
18 *वही, पृष्ठ 40*
19 *वही, पृष्ठ 40*
20 *वही, पृष्ठ 78*